International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-05-2021, Accepted: 08-06-2021, Published: 23-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 121-133

कथा-लेखिका शिवानी: कहानी- रचना एवं नारी-चिन्तन

डॉ. वीरेन्द्र कुमार शर्मा

डी.लिट्., अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, आर.एस.एम. महाविद्यालय, धामपुर, जिला-बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

घटना एवं चरित्र को लेकर कहानी लिखने वाली शिवानी ने कहानी-रचना के क्षेत्र में बहुसंख्यक कहानियों से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया है। नारी- जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हुए लिखी गयी उनकी कहानियों में नारी की स्थिति एवं दशा के परिष्कार हेतु चिंतन के जो नये आयाम पाठकों के सामने उपस्थित किये गये हैं, उन्हें समाज एवं परिवार की संरचना हेतु इसलिए आवश्यक माना गया है चूँकि नारी की सुदृढ़ एवं परिष्कृत स्थिति के बिना समाज एवं परिवार में पारस्परिक सम्बन्धों की परिकल्पना ही असम्भव है। विवेच्य कहानियाँ नारी-जागरण के लिए एक ऐसा प्रतिदर्श हैं, जो अपने पाठकों को दिशा-निर्देश करने के साथ-साथ उनकी नारी-विषयक अवधारणा को पूर्णतः सुसंस्कृत रूप प्रदान करने में महनीय भूमिका अदा करती है। कहानियाँ कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से तो अपनी उपयोगिता रखती ही हैं, साथ ही इनमें पाठकों एवं लेखकों की रुचि निर्मित करने की भी अद्वितीय क्षमता है।

मूलशब्द: कथा-लेखिका शिवानी, रचना एवं नारी-चिन्तन

प्रस्तावना

सर्जनात्मक प्रतिभा से सम्पन्न जिस रचनाकर्त्री ने जन्म के 35 वर्ष से लेकर जीवन-पर्यन्त रचना-धर्म का निर्वाह करते हुए कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त, आत्मकथा से सम्बद्ध कृतियों से हिन्दी-साहित्य की समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है, वे गौरापन्त अपने वास्तविक नाम से कम, उपनाम 'शिवानी' से ही रचना-संसार में अभिहित की जाती रही हैं चूँकि वे इसी नाम से रचनात्मक धरातल में सक्रिय रही हैं। कथा-साहित्य की अद्भुत कथा-शिल्पी उन्होंने उत्कृष्ट उपन्यासों एवं कहानियों से हिन्दी-कथा-साहित्य की दशा एवं दिशा को गति देने में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। कहानी-लेखन तो उनके सहजात संस्कार का ही प्रतिफल प्रतीत होता है। उनके द्वारा रचित प्रथम कहानी का प्रकाशन तो तभी हो गया, जब वे मात्र बारह वर्ष की थीं। उसके बाद तो उन्होंने अनेक कृतियों की रचना के साथ-साथ बहुसंख्यक उत्कृष्ट कहानियाँ लिखकर साहित्य की गतिमयी धारा को प्रवाहित करते हुए अपनी अद्भुत रचना-क्षमता का परिचय आजीवन ही दिया। वे अपनी कहानियों से हिन्दी-कहानी-जगत् में उसकी विकास-यात्रा के साथ-साथ उसे नूतन आयाम देने में सराहनीय भूमिका अदा करने में विशिष्ट रूप से पहचानी जाती है। सादगी, सरलता एवं लोकरुचि को जगाने की क्षमता तो उनकी कहानियों की अद्वितीय विशेषता है।

उनके द्वारा विरचित कहानियाँ 'शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ', 'शिवानी की मशहूर कहानियाँ', 'झरोखा', 'मृण्माला की हँसी', 'अपराधिनी', 'पुष्पहार', 'विषकन्या', 'करिए छिमा', 'लाल हवेली', 'चार दिन' नामक कहानी-संग्रहों में तो संकलित हैं ही, परन्तु अब राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली द्वारा उनकी सम्पूर्ण कहानियों के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। यद्यपि सभी कहानियाँ हिन्दी-साहित्य की बहुमूल्य धरोहर हैं, पर उनकी चर्चित

कहानियों में 'सती', 'चिरस्वयंवरा', 'स्वयंसिद्धा', 'के', 'करिए छिमा', 'चीलगाड़ी', 'पुष्पहार', 'मधुयामिनी', 'भिक्षुणी', 'अपराजिता', 'अपराधी कौन', 'कस्तूरी मृग', 'विप्रलब्धा', 'लाल हवेली', 'तोप', 'दो सखियाँ', 'कैंजा' आदि की विशेषतया गणना की जाती है।

सामान्यतः उनकी कहानियों में घटना एवं चरित्र की प्रधानता तथा परिवेश का यथार्थ-चित्रण देखने को मिलता है, पर अधिकतर कहानियों की विषय-वस्तु नारी को केन्द्र में रखकर ही रची गयी है, जिसमें नारी-विषयक विविध समस्याओं एवं उसके जीवन के विविध पक्षों का मार्मिक एवं प्रभावी अंकन करते हुए नारी की दशा एवं परिस्थिति से पाठकों को परिचित कराने का प्रयास मात्र नहीं है, बल्कि नारी के प्रति समाज में आधुनिक परिवेश के अनुरूप नयी सोच को विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करने का बोध भी है। समाज एवं परिवार के यथार्थ को ही कहानी-लेखिका ने रूपान्तरित एवं चित्रित कर अपनी कहानियों को यथार्थ के इतने सन्निकट लाकर खड़ा कर दिया है कि वे कहानियाँ न लगकर जीवन का सच्चा चित्र ही प्रतीत होती हैं। कारण यह है कि वे सच्चे मन एवं सोच से नारी की स्थिति में परिष्कार लाकर उसे सामाजिक प्रतिष्ठा देना चाहती हैं। वे आधुनिक जीवन के सन्दर्भ में नारी-मन की जटिलताओं, उलझनों, तनावों, संघर्षमयी स्थितियों, कुण्ठित एवं दमित भावनाओं, इच्छाओं आदि का सूक्ष्म अंकन करने में इतनी निष्णात हैं कि नारी-मन की प्रत्येक परत चित्रवत् ही अपनी कहानियों में प्रतिबिम्बित कर देती हैं। उनकी कहानियाँ सेक्स अर्थात् काम-विषयक प्रसंगों को प्रस्तुत करने में इसलिए पीछे नहीं है क्योंकि आधुनिक परिवेश में इनकी प्रासंगिकता स्वीकार्य एवं अपरिहार्य हो चुकी है। उन्होंने अपने समकालीन कहानीकारों की भाँति नारी-मनोविज्ञान के आधार पर नारी-मन की स्पष्ट अभिव्यंजना की है।

पर्वतीय समाज से जुड़ी होने के कारण कहानी-लेखिका अपनी कहानियों में उस समाज के परिवेशादि का यथार्थ चित्रण करती है और कुछ कहानियों में तो यह सब कुछ इतना सजीव एवं साकार हो उठा है कि समीक्षकों ने उनकी कहानियों में आंचलिकता का पुट मानकर उन्हें आंचलिक कहानीकारों की श्रेणी में ही रख दिया है, परन्तु आंचलिकता का सम्पूर्ण लक्षण1 घटित न होने से उन्हें केवल कहानीकार कहा जाना ही उपयुक्त होगा। यह बात तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि 'उनकी कहानियों में अधिकतर पर्वतीय समाज की समस्याओं, प्रथाओं का चित्रण हुआ है। अपने परिवेश को सामने लाने में उन्हें विशेष सफलता मिली है।[2] इस दृष्टि से उनकी अन्य कृतियाँ भी विचारणीय हैं, जिनमें वे कुमाऊँ क्षेत्र के आसपास के चित्रण के प्रति सजग दिखायी देती हैं। जैसा कि इस कथन से भी प्रमाणित होता है- "शिवानी अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमाऊँ क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक दिखलाने और किरदारों के बेमिसाल चरित्र-चित्रण के लिए जानी गईं"।3 कुमाऊँ क्षेत्र के साहित्यकारों में भी उनकी गणना की जाती है, परन्तु उन्हें एक सीमित दायरे में बाँधा जाना सर्वथा अनुपयुक्त ही होगा, वे तो ऐसी रचनाकर्त्री हैं, जिन्होंने अपने समय एवं स्थान से जुड़ कर अपनी कृतियों से सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य-जगत् में अपनी विशिष्ट छाप-छोड़ी है। उन्होंने तो अपने जन्म स्थान राजकोट तथा शिक्षा-स्थान शान्ति निकेतन, बंगाल के परिवेशादि को भी अपनी कृतियों में अंकित किया है। अतः व्यापक सन्दर्भ में ही उन्हें एक सजग साहित्यकार अंगीकार किया जाना समीचीन होगा। यह बात अलग है कि उनकी अधिकतर कहानियाँ नारी की मनःस्थिति एवं पारिवारिक विषयों से सम्बन्धित है, पर अनुभव का दायरा सीमित[4] न होकर व्यापक ही है और समाज एवं समय के साथ जुड़कर वे कहानी-लेखन में सक्रिय रही हैं।

कहानी-लेखिका के रूप में हिन्दी-साहित्य के लिए उनका योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने लम्बा सफल तय करते हुए अनेक कहानी-आन्दोलनों को देखा, पर किसी से भी विशेष प्रभावित न होकर ऐसी कहानियाँ लिखीं, जिनमें बदलते परिदृश्य की भी कुछ झलक देखी जा सकती है क्योंकि रचना समय-सापेक्ष एवं समाज-सापेक्ष होती ही है। विशेष रूप से वे नयी कहानी-लेखिकाओं की भाँति

आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी-सम्बन्धी-मूल्यों को बड़ी मार्मिकता से अभिव्यक्त करती हैं,[5] जिससे उनकी कहानियाँ कहीं-न-कहीं नयी कहानी की विशिष्टताओं से ओतप्रोत मानी जाती हैं, परन्तु अपने समकालीन रचनाकारों से वे सादगी सरलता के कारण अपनी पृथक् पहचान बनाये हुए हैं। उन्होंने घटना एवं चरित्र को आधार बनाकर सहज सरल ढंग से यथार्थ के धरातल पर विषय-वस्तु को प्रस्तुत कर अत्यन्त हृदयावर्जक कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें भाषा-गठन, सम्वाद-संयोजन, परिवेश-चित्रण, पात्र एवं उनका चरित्रांकन आदि का भी अद्‌भुत सामंजस्य देखने को मिलता है।

विवेच्य पाँच बेहतरीन कहानियाँ (विप्रलब्धा, लाल हवेली, तोप, दो सखियाँ एवं कैंजा) इस सन्दर्भ में विशेष अवलोकनीय हैं, जिन्हें उनकी रचना-श्रेष्ठता का परिचायक कहा जा सकता है। इन कहानियों में कुमाऊँ क्षेत्र एवं सौराष्ट्र दोनों स्थानों के परिवेश से भी आत्मसात् हुआ जा सकता है। कुमायूँ क्षेत्र के आसपास की प्रकृति के मनोरम दृश्य एवं लोकसंस्कृति की तो विशेष झलक दिखलायी गयी है। ये कहानियाँ नारी से जुड़े मुद्दों, समस्याओं आदि से सम्बद्ध है तथा इनमें नारी की इच्छाओं, भावनाओं, पीड़ाओं, कुण्ठाओं, मनोदशाओं, तनावपूर्ण स्थितियों आदि का अंकन स्वाभाविकता एवं नारी-मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में पूरी ईमानदारी एवं सच्चाई के साथ किया गया है। नारी-सौन्दर्य के आकर्षक चित्र उकेरने में भी लेखिका की निपुणता देखने लायक है, जो उसकी सभी कृतियों में परिलक्षित होती है। कहानियों की नायिकाएँ तो सुन्दरता में स्वर्ग की अप्सराएँ ही हैं। कोई क्लियोपेट्रा एवं मुगल क्वीन है (विप्रलब्धा की निम्मी/निर्मला), कोई चाँद का टुकड़ा है (लाल हवेली की ताहिरा/ सुधा), कोई अंग्रेजी साबुन की बट्टी-सी महकती है (तोप की तोप/ क्रिश्चियाना वैरोनिका टॉमस) कोई ऐसी जो सज-धज कर लोगों की नजरों के आकर्षण का केन्द्र बन जाती है (दो सखियाँ की गुरुविन्दर) और कोई तो मेनका ही लगती है (कैंजा की नंदी तिवारी/ नन्दी तर्वे)। अपनी माँ की बड़े-बड़े गुलाबी फूलों एवं मखमली बेल लगी कत्थई रंग की साड़ी में आवेष्टित नन्दी तिवारी के आकर्षक रूप की झाँकी तो इन शब्दों में अवलोकनीय है—"नियति क्या जानबूझकर ही उसकी यह अपूर्व रूप-छटा दिखाने, उस दिन सुरेश भट्ट को वहाँ खींच लाई थी? मदीने को उस गहरे कत्थई रंग की साड़ी में और भी निखर आया उसका सौ फीसदी कुमाँऊनी रंग, कान के ऊपर लापरवाही से खोंसे जाने पर भी स्वयं ही एक कलात्मक ढलान में जड़ाऊ झुमकों-से ढल गये दो बुरुंश-पुष्प और नवजात शिशु के अंगों- से चिकने कपोलों पर झलक रहे अश्रुबिन्दु!"

"नाश हो उस स्वर्ग की मेनका का"। हँसकर उस उन्मत्त प्रणयी ने अपनी दोनों फैली बाँहों के व्यूह में उसे घेर लिया था।[6]

यही नहीं, सुन्दरता की दीप्ति तो उनकी अन्य नारियों में देखने को मिलती है। इसी कहानी की गोरी पलटन के खानसामा की पत्नी मालदारिन एवं उसकी अवैध सन्तान उन्मादिनी पुत्री कमला (कमुली) में भी अद्‌भुत सौन्दर्य दिखाया गया है। अपनी सुन्दर छवि से एक तो गोरे विदेशी के प्रेम-जाल में फँस जाती है और दूसरी बलात्कारी एवं व्यभिचारी सुरेश भट्ट की शिकार हो जाती है। देखा जाए, तो यह कहना अनुचित न होगा कि नारी का सौन्दर्य भी उसके लिए अभिशाप हो जाता है, जिसके कारण उसे अत्याचार सहना पड़ता है। यह स्थिति आज भी बनी हुई है और यह नारी-जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है।

नारी-सौन्दर्य कहानी-लेखिका की अपनी ही विशिष्ट वर्णन शैली का अंग है, परन्तु अन्य महिला कहानीकारों की भाँति उन्होंने नारी की दमित काम-भावनाओं एवं यौन कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति करने में निःसंकोच होकर आगे कदम बढ़ाया है। वे नारी के हर पहलू को वाणी देते हुए पाठकों को नारी-स्थिति से परिचय कराकर केवल उसके प्रति संवेदना एवं सहानुभूति मात्र नहीं चाहती, बल्कि उसमें सुधार एवं परिष्कार हेतु सचेत भी करती हैं। उनकी नारियाँ परिस्थितिवश भले ही कुछ भी हों, पर वे दब्बू प्रकृति की नहीं हैं। यथासमय वे साहसी एवं दुधर्ष प्रकृति

की भी होकर संकटों का मुकाबला कर संघर्ष भी करती हैं। सखुवाई, गुरुविन्दर ('दो सखियाँ' कहानी), तोप ('तोप' कहानी) का तो कहना ही क्या। सखुवाई सतायी जाने पर सास को सबक सिखाकर उसके पास से मायके आकर पढ़ाई-लिखाई कर शिक्षिका बनती है और बेटे के व्यवहार से क्षुब्ध होकर प्रिंसिपल पद से सेवानिवृत्ति से पूर्व ही नौकरी छोड़कर आश्रय में स्वतन्त्रता एवं स्वाभिमान के साथ रहती है। गुरुविन्दर भी विपत्ति आने पर अपनी रक्षा हेतु पति की हत्या के परिणाम स्वरूप श्वसुर की ताड़ना से परेशान होकर मायके तथा आश्रय में रहती है, भले ही सजायफ्ता का दंश न झेलने के कारण अन्ततः उसे जीवनाहुति के लिए विवश होना पड़ता है।

तोप तो गजब की स्त्री है, जो आधुनिकता के रंग में सराबोर हुई अपने-आप को किसी पुरुष से कम नहीं समझती। वह पुरुषों की व्यंग्योक्तियों एवं छींटाकशी का भी शर्म एवं हया छोड़कर प्रत्युत्तर देती है और उनके साथ क्रीडा एवं हंसी-मजाक भी करती है, जिसे उसका दुःसाहस एवं नंगापन भी कहा गया है[7क], लेकिन वह तो एकदम पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी आधुनिक नारी की प्रतीक है। उसका स्वभाव एवं व्यक्तित्व सब कुछ आधुनिकता के साँचे में ढला हुआ है। फौज में नौकरी करना और उसके बाद पुरुषों के साथ उठना-बैठना एवं उनकी सेवा करना तथा मनोरंजन करना उसकी जीवन-चर्या का अंग रहा है, औरत होते हुए भी वह किसी भी औरत को अपने पास नहीं रखती। सम्भवतः नारी के परम्परावादी रूप से उसका सामंजस्य ही नहीं है। स्वभाव से कठोर होते हुए वह मृदु एवं परोपकारी है, जिनके पास उसके सेवा-शुल्क देने की सामर्थ्य नहीं होती, उनकी सेवा वह चैरिटी से ही करती है, राजेन्द्र एवं सैम्युअल दोनों उसकी इसी भावना के कारण उसके यहाँ निःशुल्क रहते हैं। इतने पर भी उसका एकाकीपन उसके लिए अभिशाप है, जिसे कहानी में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हुए कहानी लेखिका ने उसके साहसी व्यक्तित्व को भी संरक्षित किया है। बढ़ती उम्र में अपने से छोटे पुरुष से विवाह कर जीवन-साथी वैज्ञानिक राजेन्द्र के साथ आगरा के ताजमहल की सैर करना और उसके मर जाने के बाद दूसरे जीवन-साथी के रूप में डॉक्टर सैम्युअल को चुनना यह सब उसके स्वतन्त्र एवं साहसी व्यक्तित्व के परिचायक हैं। इतने पर भी लेखिका ने उसके माध्यम से नारी के अकेलेपन की पीड़ा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। वास्तव में नारी के लिए अकेलापन अखरता है, वह सेवा-कार्य या अन्य किसी कार्य में अपना मन भले ही लगा ले, पर उसे कभी-न-कभी अपने जीवन में एक पुरुष साथी की आवश्यकता होती है। समाज एवं परिवार के बिना उसका जीवन अधूरा है, उसे यह मानसिक एवं बाहरी रूप से स्वीकारना ही होगा। नारी की मनःस्थिति को अकेलेपन में अनुभूत कराने की दृष्टि से भी यह कहानी अत्यन्त सार्थक है। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से नारी को अपनी इच्छानुसार जीवन-साथी चुनने का भी पथ प्रशस्त किया है और आधुनिक समाज एवं परिवार को भी उसकी इस इच्छा का सम्मान करने हेतु प्रेरित कर एक अच्छा सन्देश भी दिया है। वास्तव में यह छोटी-सी कहानी अपने पाठकों (स्त्री-पुरुष दोनों) के लिए नारी के प्रति चिन्तन के अनेक नवीन आयाम प्रदान करती हुई अपना विशिष्ट स्थान रखती है। चरित्रांकन की दृष्टि से भी यह उल्लेख-योग्य कहानी सफल है, जिसमें नारी-मनोविज्ञान के आलोक में लेखिका ने एक नारी के मनोभावों, इच्छाओं, स्वभावगत अनेक विशेषताओं आदि को सहज एवं प्रभावी ढंग से अभिव्यक्ति दी है। वह 'तोप' कहानी की नायिका है, उसका वास्तविक नाम तो क्रिश्चियाना वैरोनिका टॉमस है, पर उसके व्यक्तित्व एवं रंग के कारण लोग उसे तोप कहते है[7ख] उसके पिता पिथौरागढ के किसी स्कूल के अध्यापक थे। वह एक मिशनरी मेम के साथ मद्रास चली जाती है और फौज में नौकरी करने के बाद वहाँ से छुट्टी पाकर सेनेटोरियम भवाली के पास 'सेवन ओक्स' नामक बंगले, जो उसका रेस्ट हाऊस है, में रहकर सेनेटोरियम से छुट्टी पाये पुरुष मरीजों की देखभाल शुल्क रु. 600/- लेकर करती है और जो निर्धन है, उनकी सेवा निःशुल्क। उसी के चरित्र को आधार बनाकर यह कहानी लिखी गयी है, जिसमें नारी के स्वभाव एवं उसके एकाकीपन की स्थिति

का मार्मिक अंकन करने में शिवानी ने कहानी का ताना-बाना बुना है। इस चरित्र-प्रधान कहानी में नारी का आधुनिक रूप देखने लायक है।

प्रसंगवश समीक्षित इस कहानी के क्रम में अन्य चार कहानियों ('विप्रलब्धा', 'लाल हवेली', 'दो सखियाँ' एवं 'कैंजा') की नारियों के विविध पक्ष अवलोकनीय हैं। विप्रलब्धा कहानी में चित्रित नायिका निम्मी अर्थात् निर्मला के माध्यम से कहानी-लेखिका ने भारतीय नारी (कन्या) के परम्परागत रूप को प्रस्तुत करते हुए एक कन्या के विवाह तय हो जाने के बाद टूटने के दर्द की अत्यन्त हृदयस्पर्शी अभिव्यंजना की है, जिसे रिश्ता तोड़ने वाले हर पुरुष को समझना आवश्यक है। इस कहानी में सम्पूर्ण घटना-क्रम (विवाह तय होना, वर-पक्ष के यहाँ मृत्यु जन्य परिस्थितियों के कारण पुनः पुनः विवाह के टलने से कन्या में निराशा एवं खीझ उत्पन्न होना एवं उसके मानसिक तनाव से परिवर्तित व्यवहार के कारण सुरेश का विवाह के लिए मना करना, कन्या नीलम का सुरेश के द्वारा पहनायी गयी अँगूठी को विवाह की आशा में ही धारण किये रहना तथा अपने मामा की पुत्री निर्मला/ निम्मी के विवाह में सम्मिलित होने के लिए अल्मोड़ा जाते समय उसका विवाह सुरेश के पुत्र से होने की बात पता चलने पर सुरेश की पहनायी गयी अँगूठी को उतारकर अपनी सहयात्रिणी सखी एवं बहिन को सुरेश के लिए उसकी पुत्रवधू को देने हेतु सौंपना, सखी द्वारा अँगूठी सुरेश को न देकर चुपचाप पुत्र-वधू को पहनाकर सुरेश की स्मृति में अँगूठी की पहचान की आशा कर कन्या की पीड़ा को समझने की कल्पना करना) को सहजता से प्रस्तुत करते हुए कुमाऊँ क्षेत्र के परिवेश लोकपरम्परा, स्त्री जनोचित वार्त्ता एवं हास्य व्यंग्य आदि का भी सजीव एवं साकार रूप अनुभूतिगम्य कराने का प्रयास भी कहानी लेखिका का सराहनीय है, जिसे उसने स्वानुभूति के सहारे यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है, जिससे कहानी में आंचलिकता का समावेश भी हुआ है, परन्तु नीलम (निम्मी) की चारित्रिक विशेषताओं, स्वभावगत आदतों आदि का अंकन स्वाभाविकता के धरातल पर देखने लायक है।[8] लेखिका ने उसके चरित्र के द्वारा बदलते जीवन-सन्दर्भों में आज के पुरुषों विशेषतः नवयुवकों को नारी की इस मानसिक स्थिति का एहसास कराकर एक अच्छी प्रेरणा दी है ताकि इस प्रकार की स्थितियाँ ही उत्पन्न न हों। कहानी के अन्त में स्त्री-पुरुष की मानसिकता के अन्तर को दर्शाते हुए लेखिका के द्वारा कहे गये ये वाक्य इसी ओर संकेत करते हैं, जिन्हें कहानी का सार कहा जा सकता है- "अपने बेटे की बहू की अँगुली में उस अँगूठी को एक न एक दिन वह देख ही लेगा, जिसे दिखाकर, सालने के लिए वह उपहार दिया गया था, शायद संसार की कोई भी स्त्री उस सुन्दर चौकौर नीलम को अपनी अंगुली से, स्वेच्छा से विलग नहीं होने देगी। पर काल-मत्स्य के गर्भ से निकली और अपनी विप्रलब्धा नायिका की लौटाई गई उस नीलांगुरीय को क्या इस युग का दुष्यन्त पहचान पाएगा"।[9] वस्तुतः क्षणिक आवेश में रिश्तों को तोड़ना भी उचित नहीं है। यही इस कहानी का प्रमुख सन्देश है। रिश्ता टूटने से नारी (कन्या) की मनःस्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही समाज एवं परिवार में भी गलत धारणा, अविश्वसनीयता, रिश्तों में कड़वाहट उत्पन्न हो जाती है।

शिवानी ने अपने समकालीन रचनाकारों की भाँति अपनी कृतियों में देश-विभाजन की त्रासदी का मार्मिक एवं यथार्थ अंकन किया है। उनकी 'लाल हवेली' कहानी इसी से सम्बद्ध है, जिसमें एक नवविवाहिता नारी के जीवन में भारत-पाक बँटवारे के कारण आयी विपत्ति को वाणी देते हुए उन्होंने नारी की विवशता, प्रेमभावना, पीड़ाजन्य मनोदशा आदि की हृदयस्पर्शी अभिव्यंजना की है। देश-विभाजन के कारण ही सुधा का नवविवाहित जीवन बर्बाद हो गया, वह अपने मामा के साथ मुल्तान क्या गयी कि उसे दंगे की ज्वाला में फँस जाने पर मुस्लिम गुड़ों से बचाने वाले रहमान अली, जिसकी जवान बीबी को भी देहली में पीस दिया गया था, वह जान बचाकर भाग आया था बुझा और घायल दिल लेकर[10], से विवाह करना पड़ा और जब उसे पाकिस्तान से ताहिरा के रूप में अपने पति रहमान अली के साथ उसके मामू के बेटे अल्ताफ की

शादी में सम्मिलित होने भारत में उसी जगह आना पड़ा, जहाँ उसका हिन्दू लड़के से विवाह हुआ, तो लाल हवेली को देखकर उसके अन्दर अपने पूर्व पति के प्रति न केवल प्रेम जागृत हुआ, बल्कि उसे देखने के लिए चोरी-छिपे हवेली में जाती है और अपनी हीरे की अँगूठी भी चढ़ाती है तथा उनकी सलामती के लिए मनौती भी मांगती है, भले ही उसको उसके पूर्व पति ने नहीं देखा। वह अपने पूर्व पति के प्रति प्रगाढ प्रेम से तब अत्यधिक अभिभूत होती है, जब उन्हें आज भी अविवाहित देखती है। वास्तव में उसके पूर्व पति वकील साहव ने भी उसके प्रति प्रेम के कारण आज तक विवाह नहीं किया[11], जिससे इस कहानी में पुरुष की नारी के प्रति प्रेम-भावना, समर्पण, त्याग आदि वृत्तियों की भी मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इस प्रकार लेखिका ने स्त्री-पुरुष के आदर्श-प्रेम की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत कर कहानी को आकर्षक रूप प्रदान किया है, जो उसे उदार एवं व्यापक विचार-धारा से सम्पन्न रचनाकारों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देती है। इतने पर भी इस कहानी में नारी-हृदय में विद्यमान प्रेम एवं समर्पण की भावना को विषम परिस्थितियों में दिखाये जाने से अत्यधिक हृदयावर्जकता आ गयी है। विवशता ने नारी सुधा को कुछ भी बना दिया हो, पर उसके अन्दर अपने पूर्व के उल्लास एवं खुशियों के प्रति अब भी लगाव है और उन्हें प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा भी है। उसमें भारतीय नारी का वह गुण है, जिससे नारी एक बार हृदय समर्पण करने के बाद उससे पृथक् होने की कल्पना भी नहीं करती, भले ही मजबूरी उससे कुछ भी करा ले। इस भावना की अभिव्यक्ति कहानी में अनेक स्थलों पर हुई है।[12]

'दो सखियाँ' अपेक्षाकृत लम्बी कहानी है, जिसमें वृद्धावस्था में आश्रय में रहकर मित्रता के बन्धन में बँधी दो सखियों- सुखवाई (मास्टरनी) एवं आनन्दी (डोकरी) की व्यथा-कथा के माध्यम से महिलाओं से जुड़े मुद्दों का वर्णन करते हुए लेखिका ने आधुनिक सन्दर्भ में टूटते मानवीय सम्बन्धों एवं मूल्यों के कारण बिखरते परिवार का अंकन अत्यन्त सूक्ष्मता एवं स्वाभाविकता के साथ किया है। सखुवाई वह नारी है, जो विवाह के बाद पति के बस-दुर्घटना में मरने पर पुत्रवंचिता कर्कशा सास के दुर्व्यवहार से तंग आकर उसे (सखुवाई को) मारने हेतु उसी (सास) के द्वारा फेंकी गयी जली लकड़ी से सास को धराशायी कर अपने मायके में रहती है और पढ़ लिखकर उसी कॉलेज में शिक्षिका हो जाती है और फिर प्रिंसिपल के पद से स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति लेकर आश्रय में इसलिए रहने आती है क्योंकि उसका पुत्र उसके सभी अरमानों पर पानी फेर चुका है। पढ़-लिखकर पुत्र का विदेश जाना और उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका क्रमशः अमेरिकन लड़की, सिड़नी की लड़की से विवाह में धोखा खाने पर अर्थात् उनके छोड़कर चले जाने पर नाइजीरियन लड़की से विवाह करना उसे अच्छा नहीं लगा और एक दिन अपने पुत्र रोहित द्वारा भेजे गये परिवार के चित्र में सन्तान (एक पुत्री एवं दो पुत्र) की शक्ल सूरत देखकर तो उसे ऐसा आघात लगता है कि वह सब कुछ बेचकर आश्रय में अध्ययनरत रहते हुए जीवन व्यतीत करने लग जाती है। उसकी मानसिक पीड़ा इतनी अधिक है कि वह ईश्वर के प्रति आस्था भी नहीं रखती। वास्तव में एक नारी लाड़ प्यार से पाले गये पुत्र के विवाह की जो खुशियाँ एवं इरादे पालती है, उनके टूट जाने पर उसकी पीड़ा की अभिव्यक्ति रचनाकर्त्री सखुवाई के स्वर में सहज ढंग से करने में सफल रही है। उसी के द्वारा परिवार में सास के अमानवीय व्यवहार से बहू रूप नारी के दुःख-दर्द को अभिव्यक्त किया गया है।

दूसरी नारी आनन्दी है, जो कम पढ़ी लिखी है, पर कुशल गृहिणी के दायित्व का निर्वाह बड़ी ईमानदारी एवं लगन से करती रहती है। उसने अपने एक पुत्र (श्याम) और दो पुत्रियों (रुक्मणि/ रुक्मन एवं राधा) को पढ़ा-लिखाकर उनका विवाह तो अपनी इच्छा से ही किया है, परन्तु किसी से भी उसे सुख नहीं मिला। पुत्र तो विदेश सेवारत ऊँचा अफसर होकर विवाह के बाद अपनी पत्नी एवं ससुराल-पक्ष का ज्यादा प्रिय हो गया और गृह-कलह के कारण माँ के लिए पराया हो गया। एक दिन तो अपनी पत्नी एवं दोनों बहिनों के बीच विवाद होने पर अपनी

सास के सामने अपनी बहिनों से अपशब्द सुनकर परिवार सहित विदेश चला गया और माँ का दामन छोड़ गया। दूसरी सन्तान होने की स्थिति में उसने माँ को सूचित तो किया, पर सेवा के लिए अपनी सास को ही बुलाया, जो माँ आनन्दी के लिए अत्यधिक पीड़ादायक लगा। पुत्र की उपेक्षा से परेशान अकेली आनन्दी को उसके वर्षों से जोड़े गये सारे सामान को मिट्टी के मोल बेचकर एवं किराये के मकान से लाकर उसकी दोनों पुत्रियाँ बारी-बारी से अपने पास रखती तो हैं, लेकिन दामादों एवं बच्चों के व्यवहार एवं उसके कारण होते गृह-कलह से उसका उनके यहाँ रहना मुश्किल हो जाता है, जिससे पुत्रियों द्वारा आश्रय स्थल में छोड़ दी जाती है। पूजा-अर्चना में मन लगाकर वह वहाँ सखुवाई के साथ रहकर जीवन-यापन करती है। इस प्रकार भरे-पूरे एवं खुशहाल परिवार की होते हुए भी वह अपने-आप को अकेला महसूस करती है, अन्त में तो उसकी पुत्रियाँ भी उससे मिलने कम ही आती हैं, फिर भी वह पुत्रियों के प्रति मोहवश उन्हें देने के लिए अपने पास बहुत समय से सुरक्षित रखी हुई काँटेदार चूहादन्ती गोखरुओं की थैली मास्टरनी सखुवाई को सौंप देती है। उसके मरने पर पुत्रियों के न आने पर तथा माँ के प्रति उचित व्यवहार न होने से क्षुब्ध सखुवाई आनन्दी की सौंपी गयी धरोहर को तो पुत्रियों को न देकर समुद्र के अगाध जल में फेंक देती है, परन्तु उसकी दी अंगूठी को स्वयं धारण कर लेती है, जिसे उन दोनों के मध्य मैत्री का प्रतीक कहा जा सकता है। दोनों ही दुःखी नारियाँ परस्पर वार्त्ता, नोंकझोंक, हास्य-व्यंग्यमयी उक्तियों से एक-दूसरे के दुःख-दर्द को बाँटकर अपना जीवन-यापन कर लेती हैं, परन्तु विडमबना यह है कि एक नारी एवं माँ के रूप में दोनों ने ही ने अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार जो पीड़ा, यातना एवं दुःख सहन किया है, उसे एक नारी सदैव से ही अनुभव करती आ रही है, जिसे कहानी में अभिव्यक्त कर लेखिका ने एक परिवार में नारी की दशा का यथार्थ निरुपण करने में अद्भुत कुशलता का परिचय दिया है। इस कहानी में नारी के अनेक रूपों- बहू, सास, माँ, पुत्री आदि- का भी दुःख-दर्द एवं व्यवहार भी वास्तविक रूप में देखा जा सकता है, जिसे सामान्य रूप से समाज के अधिकतर परिवारों में भी प्रारम्भ से आज तक ही नहीं, बल्कि भविष्य में भी देखा-सुना जा सकता है। एक टूटते परिवार की वास्तविकता से परिचित कराती हुई यह कहानी पाठकों के लिए बहुत सारे प्रश्न एवं समाधान का पथ प्रशस्त करने में अपनी महती भूमिका सदैव अदा करती रहेगी, यह इस कहानी की शाश्वतता एवं चिरन्तनता है।

इस कहानी में चित्रित गुरुदासपुर निवासी अवकाश प्राप्त फौजी अफसर की पुत्री गुरुविन्दर कौर की कथा तो नारी के विविध पहलुओं से सम्बन्ध रखती है। उसका पढ़ाई-लिखाई करने से पूर्व ही कम उम्र (सोलह वर्ष) में कनाडा में टिम्बर के व्यापारी चाचा की सलाह से समृद्ध प्रवासी सिख परिवार में विवाह, मायके से दूर कनाडा जाना, मद्यपी एवं नामर्द इंसान से विवाह होने के कारण शारीरिक एवं भौतिक इच्छाओं की पूर्ति न हो पाना, शराबी पति के शराबी दोस्तों की काम-लोलुपता से अपनी रक्षा एवं दोस्तों द्वारा ही बुरी नीयत से पकड़ने पर पति से संरक्षित न होने पर क्रोधावेश में अपने पति की हत्या, श्वसुर की प्रताड़ना, सज़ा भुगतना, भाईयों के उग्रवादी हो जाने से पिता की चिन्ता के कारण मायके में भी न रह पाना, आश्रय-स्थल में सब कुछ भूलकर जीवन-यापन करने में परिचित करतार सिंह द्वारा पहचान लिये जाने पर पति-हत्यारिन का दंश पुनः झेलने की स्थिति उत्पन्न होना एवं लोगों के तानों एवं दुर्व्यवहार से परेशान होकर समुद्र में डूबकर आत्महत्या करना सभी कुछ इस प्रकार कहानी में वर्णित है कि नारी की समाज एवं परिवार में स्थिति का स्पष्ट एवं विशद अनुभव करा देती है। विडम्बना यह है कि समाज एवं परिवार में नारी की सेवा-भावना, त्यागमयी वृत्ति, उदारता, वत्सलता, ममता आदि अनेक नारी-सुलभ विशेषताओं को भी नज़र-अन्दाज़ कर दिया जाता है, पर उसके द्वारा किये गये दोष, अपराध, गलती आदि, चाहे वह भावावेश या अज्ञानतावश ही क्यों न किया गया हो, आदि को सदैव याद किया जाता है। वह आत्मीय स्वजनों से सताये जाने

पर इतनी परेशान नहीं होती , जितना समाज से तिरस्कृत होकर। इस तथ्य को कहानी में इन शब्दों में यथार्थ अभिव्यक्ति दी गयी है- "कितनी मूर्ख थी गुरुविन्दर! नारी का कलंक क्या चिता में चढ़ने तक उसे छोड़ता है? आत्मीय स्वजनों की अवमानना सहना उतना कठिन नहीं होता, जितना समाज की। सखुवाई उसे उसके गहन नैराश्य से जितना ही बाहर खींचने की चेष्टा करती, वह उतनी ही गहराई में धँस जाती। नित्य हँसने-हँसाने वाली वह हँस-मुख लड़की एकदम ही गुमसुम हो गयी थी"।[13]

नारी की पीड़ा एवं वेदना नारी ही समझ सकती है, जिसका प्रतिबिम्ब मास्टरनी सुखवाई में झलकता है। उसने गुरुविन्दर का अन्त तक साथ दिया, उसे समझाया, धैर्य बँधाया, परन्तु उससे भी गुरुविन्दर की पीड़ा खत्म न हो सकी और अन्ततः उसे प्राणों के त्याग का मार्ग ही चुनना पड़ा। प्रमुख बात यह है कि इतनी असीम वेदना सहकर भी नारी अपने सुहाग के प्रति विशेष लगाव रखती है, जिसे भी गुरुविन्दर के माध्यम से अभिव्यक्त करने में कहानी-लेखिका का वर्णन-कौशल देखने लायक है। गुरुविन्दर के आत्महत्या करने से पूर्व सजना-धजना, सगाई का जोड़ा पहनना नारी के इसी स्वभाव का परिचायक है, जो कहानी में सहजता से अंकित हुआ है। एक खुशमिज़ाज़ नारी का यह कदम निश्चित रूप से सम्पूर्ण समाज के लिए अभिशाप है। पुरुष बड़े से बड़ा अपराध करके भी समाज में रह सकता है, पर नारी नहीं। नारी की इस दयनीय स्थिति एवं दुर्दशा से उभारकर ही यह कहानी उसे पुरुष के समकक्ष लाकर खड़ा करना चाहती है।

इस कहानी में एक वेदनामयी घटना का भी वर्णन है, जिसमें नारी-पुरुष दोनों की मनोदशा, पीड़ा, प्रवृत्ति आदि को स्वर प्रदान कर शिवानी ने समाज की उस सच्चाई को पाठकों के सामने रखा है, जो आज भी देखी-सुनी जाती है। मेहनत करके सम्पत्ति जोड़ने वाले कलकत्ते के धनी व्यापारी हरदयाल लोढा लाखों का दहेज देकर जिस पुत्री का विवाह करते हैं, वह लोभी जामाता एवं समधी के द्वारा इसलिए मार दी जाती है कि पिता हरदयाल पुत्र के एयरक्रैश में मर जाने से आहत अपनी पत्नी के छत से कूदकर आत्महत्या करने के बाद अकेले हो जाने पर भी अपनी सारी सम्पत्ति एवं कोठी उन्हें नहीं देते। पुत्री द्वारा प्रेषित पत्र को फाड़कर फेंक देते हैं चूँकि उन्हें विश्वास था कि उनकी पुत्री सुधा को कोई नहीं मार सकता। मारे जाने पर वे उनका तो कुछ न कर सके, पर उस पुत्री से हाथ धो बैठे, जो कि गर्भवती भी थी। बाद में उन्होंने अपनी सम्पत्ति के हिस्से में से अधिकांश सम्पत्ति तो दानखाना बना ट्रस्टियों को सौंप दी और कोठी उस कन्या-विद्यालय के नाम कर दी, जिसमें उनकी पुत्री पढ़ी थी। शेष धनराशि बैंक में जमाकर आश्रय में रहने लगे, जहाँ उनका बड़ा सम्मान किया जाता था। यह घटना मुख्यतः तो दहेज-प्रथा के कारण नारी की पीड़ा एवं मनोदशा की यथार्थ अभिव्यक्ति करती है, साथ ही पुत्र, पुत्री एवं पत्नी के मर जाने के कारण एक पिता अर्थात् पुरुष के दर्द को वाणी देते हुए उसकी एकाकीपन की स्थिति को भी प्रदर्शित करती है। पत्नी के मर जाने पर तो उनकी वेदना देखने लायक है कि उन्होंने विवाह की अंगूठी को त्यागा ही नहीं। लोभी-लालची जामाता एवं समधी की प्रवृत्ति एवं क्रूरतापूर्ण मनोवृत्ति भी यहाँ देखी जाती है। खूब दहेज मिल जाने के बाद भी उनका माँगना कम नहीं हुआ और उन्होंने गर्भवती नारी को जलाकर मार दिया। झूठ यह बोला कि वह चाय बनाते समय जल गयी। पुत्र की असामयिक मृत्यु से होने वाली असहनीय वेदना से एक माँ की स्थिति का इससे अधिक दुःखद स्वरूप तो मुश्किल से ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार नारी को जीवन में कष्ट ही भोगना पड़ता है।

यह सम्पूर्ण कहानी वर्तमान सन्दर्भ में कई दृष्टियों से अपना महत्त्व रखती है और उन लोगों के लिए तो नसीहत है, जो वृद्धों की देखरेख एवं सेवा स्वयं न करके उन्हें वृद्धाश्रम या आश्रय स्थल में छोड़कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर देते हैं। वास्तव में कहानी-लेखिका ने पारिवारिक परिवेश से सम्बद्ध इस पारिवारिक कहानी के माध्यम से मुख्यतः नारी-जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को उठाकर उनके समाधान हेतु ही पाठकों की चेतना को

उद्‌बुद्ध करने का एक सफल प्रयास किया है। साथ ही परिवार से जुड़े विभिन्न मुद्दों को प्रस्तुत कर उनके सुझाव हेतु मार्ग भी दिखाया है। कहानी जैसे छोटे फलक पर ऐसा कर पाना किसी भी अन्य सर्जक की सामर्थ्य से बाहर ही प्रतीत होता है। यह कहानी वर्तमान सन्दर्भ में बदलते जीवन-मूल्यों के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में पड़ती दरारों तथा नारी की दयनीय स्तिति का अवलोकन कराकर समाज एवं परिवार के बिखरते रूप को सँवारने का सन्देश देती हुई नारी-स्थिति के परिष्कार हेतु ही अपने पाठकों को प्रेरित नहीं करती, बल्कि यह भी सूचित करती है कि नारी के बिना समाज एवं परिवार की परिकल्पना ही सम्भव नहीं है। अतः नारी की इच्छाओं, भावनाओं, समस्याओं के प्रति सजग रहते हुए आधुनिकता के घटाटोप में बिखरते टूटते जीवनादर्शों से भी अलग रहकर ही नारी तथा समाज एवं परिवार के विकास का पथ प्रशस्त करना अति आवश्यक है। यह कहानी कहानी न होकर सम्पूर्ण मानव-समाज के लिए एक ऐसा प्रतिदर्श है, आलोक स्तम्भ है, जिसके प्रकाश में सचेत पाठको को नव-निर्माण की ओर अग्रसर होने में कोई कठिनाई नहीं होगी। कहानी में प्रत्येक घटना एवं चरित्र वास्तविकता के धरातल पर स्थित है और नारी-जीवन के अनेक पक्षों का उद्घाटन कर चिन्तन के विविध आयाम पर पहुँचाकर सम्पूर्ण जनमानस को ही नारी-जीवन में परिष्कार हेतु सचेत करती है। इसके कथ्य एवं शिल्प में शिवानी की अद्‌भुत कला-कुशलता का परिचय मिल जाता है। दोनों सखियों की सरस एवं हास्य-व्यंग्यपूर्ण बातों से तो कहानी में सजीवता के साथ रसात्मकता का ऐसा सन्निवेश हुआ है कि जिज्ञासु पाठक रुचिपूर्वक पढ़ते हुए सब कुछ सहजता से हृदयंगम कर सकते हैं। कहानी का अन्त तो इतना मार्मिक है कि पाषाण-हृदय पाठक को भी मास्टरनी सुखवाई की तरह अश्रु-विगलित कर संवेदना एवं सहानुभूति से आप्लावित कर देगा।[14] यह उत्कृष्ट कहानी एक चलती-फिरती फिल्म ही है। रंगमंच पर भी यह अभिनेयता की दृष्टि से सफल होगी।

“कैंजा” जिसका शाब्दिक अर्थ विमाता या सौतेली माँ है, शीर्षक, कहानी के केन्द्र में नन्दी तिवारी नामक नारी है, जो एक मातृहीन बच्चे के लिए अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही न्यौछावर कर देती है, पर मातृत्व का सच्चा सुख पाने से अन्ततः वंचित रहती है। यह लम्बी कहानी नारी की प्रेम-भावना एवं त्याग-भावना का मिला-जुला रूप दिखाने में अद्वितीय है। नेपाल के राणाओं के राज ज्योतिषी हेमचन्द तिवारी ‘शास्त्री जी’ की एक मात्र सन्तान नन्दी के सौन्दर्य से प्रभावित होकर सम्पन्न राघव भट्ट का पुत्र एवं शास्त्री जी के मित्र गदाधर भट्ट का भतीजा सुरेश भट्ट, जो एम.ए. एवं वकालत पास कर चुका था, उससे विवाह करना चाहता है, परन्तु उसके दुर्गुणों (शराबी, दुराचारी, बलात्कारी एवं काम-लोलुप तथा जुआरी, जिसने पिता की सारी सम्पत्ति को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया) के कारण शास्त्री जी उसके प्रस्ताव से सहमत नहीं होते तथा अपनी पुत्री की कुंडली में वैधव्य योग होने से उसका विवाह करने की अपेक्षा उसे पढ़ा-लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहते हैं। मन ही मन उसे चाहकर नन्दी पिता की इच्छानुसार बाहर जाकर डाक्टरी की पढ़ाई करती है, एक बार ग्रीष्मावकाश में घर आने पर शास्त्री के संरक्षण में रहते हुए भी वह सज-धजकर अकेले ही घूमने जाते समय नारी-लोलुप सुरेश भट्ट, जो पुंश्चली पार्वती से विवाह करने के बाद विधुर भी हो चुका था, की बाहों का शिकार हो जाती है, उसके द्वारा शादी का प्रस्ताव दिये जाने पर भी उसके बाहु-बन्धन से विलग होकर एवं हाथ झटककर अपने पिता के घर आ जाती है। एक वर्ष बाद परीक्षा समाप्त कर हाउस सर्जन बनते ही पिता की बीमारी का समाचार पाकर जब घर पहुँचती है, तो पिता की मृत्यु हो जाने के उपरान्त सुरेश भट्ट से मन ही मन शादी करने की इच्छा रखते हुए भी एक ऐसी परिस्थिति में फँस जाती है कि उसे विधवा मालदारिन, जिसने स्वयं को गोरी पलटन के एक आंग्ल प्रभु से संबंध स्थापित कर अपने पति खानसामा को रोज-रोज के झगड़े से मुक्ति पाने हेतु चाय में विष देकर मार दिया था, की अवैध सन्तान उन्मादिनी पुत्री कमला (कमुली) के साथ सुरेश भट्ट द्वारा किये गये व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र को इसलिए अपनाना पड़ा कि

वह प्रयास करके भी पुत्र की माँ को न बचा सकी और सबके मना करने पर भी सौराष्ट्र में अपने साथ लेकर उसका पालन-पोषण करते हुए नन्दी तर्वे नाम से रहने लगती है, पर एक दिन विद्यालय में सहपाठियों द्वारा उसके इस पुत्र रोहित चन्द्रा से पिता का नाम पूछे जाने पर वह उसे लेकर उसके पिता सुरेश भट्ट से मिलाने हेतु नैनीताल की ओर आती है और अल्मोड़ा के पास अपने ग्राम में आकर पुत्र को किशन के साथ नैनीताल घूमने भेजकर मरणासन्न सुरेश भट्ट से सबके सामने इसलिए विवाह कर लेती है ताकि पुत्र को सगे माँ-बाप का सुख प्राप्त हो सके और वह अन्य कुछ भी ऐसा न जान सके, जिससे उसे दुःख हो। इतने पर भी पुत्र के आने तक पिता की मृत्यु हो जाती है और तीसरे दिन उसके सौराष्ट्र जाने से पूर्व ही पुत्र की नानी विधवा मालदारिन के अचानक आ जाने पर पुत्र के प्रश्न का उत्तर नानी द्वारा दिये जाने से पुत्र को यह ज्ञात हो जाता है कि वह जिस नन्दी तर्वे के साथ रहता है, वह उसकी सगी माँ न होकर कैंजा अर्थात् सौतेली माँ है। भले ही वह नन्दी तर्वे में अपनी सगी माँ के रूप में पुकारना चाहता है, जिसे वह भी अंगीकार करती है, परन्तु उसे वह खुशी नहीं मिल पाती जिसको वह चाहती थी जिसे कहानी-लेखिका ने कहानी के अन्त में इस प्रकार अभिव्यक्ति दी है-

"मैं तुमको कैंजा नहीं कहूँगा, कभी नहीं"। "कौन कहता है, मैं तेरी कैंजा हूँ, पगले! कौन- "पर हँसकर उसे बहलाने की लाख चेष्टा करने पर भी रोहित की कैंजा फिर हँस नहीं पाई।[15]

आशय यह है कि सब कुछ करने के बाद भी नारी के जीवन में खुशी नहीं आ पाती। नन्दी को न तो विवाह का सुख मिला और न ही विवाह करने के बाद गृहस्थी का सुख। उसे नियति के हाथों विवश होकर वैधव्य का दुःख ही झेलना पड़ा और सबसे दुःखद बात यह हुई कि न चाहने पर भी उसे अन्ततः विमातापन की ही अनुभूति हुई। यही उसके जैसी नारी के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है, जिसे कहानी-लेखिका ने अपनी संवेदना एवं अनुभूति से अत्यन्त स्वाभाविक एवं मार्मिक रूप प्रदान किया है। इस लम्बी कहानी में अनेक घटनाओं का समावेश मुख्य पात्रों- नंदी तिवारी एवं सुरेश भट्ट- के चरित्र को उभारने की दृष्टि से हुआ है। साथ ही कुमाऊँ-क्षेत्र के परिवेश एवं लोक संस्कृति का भी यथार्थ अंकन अत्यन्त विस्तार से होने से आंचलिकता की सुन्दर झाँकी तथा भाषागत संचरना में क्षेत्र-विशेष की शब्दावली [पोथी (बेटी), चिहुड़ (पुत्र), छोर मुल्या (बिना माँ-बाप का), जीरे बच रै (जीता रह बेटा), इजू (माँ), कैंजा (विमाता या सौतेली माँ) आदि] के प्रयोग होने से कहानी स्थानीय परिवेश के सन्निकट पहुँच गयी है। पात्रों (स्त्री-पुरुष दोनों) के मध्य वार्त्तालाप एवं व्यवहार से भी ऐसा ही आभास होता है। गदाधर भट्ट द्वारा प्रस्तुत ये पंक्तियाँ भी इस सन्दर्भ में द्रष्टव्य हैं-

"हसुवा हैनरी जसुआ जैका।
कल नी जाणी च्याल मैकैका"।।[16]

इसके साथ हल्की सी झलक सौराष्ट्र की भी दिखायी गयी है, जिसे विशेषकर रोहित के कथन में अनुभूत किया जा सकता है।[17] नारी-विषयक समस्याओं एवं उसकी दशा, इच्छा, पीड़ा, स्वभावगत विशेषता आदि का चित्रण भी यथार्थ के धरातल पर ही हुआ है, चाहे वह नन्दी तिवारी से सम्बद्ध हो या फिर खानसामा की पत्नी मालदारिन या अन्य वर्णित स्त्री-पात्रों से। मालदारिन का अमर्यादित आचरण भी उसकी हार्दिक भावनाओं की उपेक्षा के कारण है और उसको लेकर मुखरा ताई जैसी स्त्रियों के ताने तो एक स्त्री के स्वभाव का एहसास कराते हैं। साथ ही उसके द्वारा नन्दी का कन्या-दान किया जाना एक माँ के दायित्व-निर्वाह की ओर बढ़ता सही कदम है। नन्दी लेखिका के शब्दों में मधुरभाषिणी तेजस्विनी, दृढ़निश्चयी डाक्टरनी तो है ही[18], साथ ही उसमें प्रेम-भावना ममता, स्वतन्त्रता, शालीनता, शिष्टता आदि गुणों का भी अद्भुत समावेश है। उसके रूप में एक सभ्य नारी के दुःख- दर्द की अभिव्यंजना को कहानी में साकार करने में तो कहानी-लेखिका सर्वाधिक सफल रही है। उसका चरित्रांकन पाठकों के लिए चिन्तन के कई आयाम प्रदान करता है,

जिसमें प्रमुखतः तो यह है कि एक कन्या का उचित समय पर उसकी इच्छानुसार विवाह न किये जाने से नारी-जीवन के लिए पीड़ादायी है, इस बात को समाज एवं परिवार को समझना आवश्यक है। पिता के रूप में शास्त्री जी की सोच सही हो सकती है, परन्तु एक पुत्री की मनःस्थिति भी समझनी होगी, केवल उसे भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। वस्तुतः वैवाहिक जीवन से सम्बद्ध सुखादि से किसी भी नारी को वंचित नहीं किया जा सकता। यह कहानी अनेक दृष्टिकोणों से महत्त्वपूर्ण है। इस घटना एवं चरित्र प्रधान कहानी में परिवेश एवं प्रकृति-चित्रण, पात्र, भाषिक संरचना आदि तो उत्कृष्ट हैं ही, साथ ही इसमें अभिनेयता एवं नाटकीयता का गुण भी है। इस पर एक अच्छी फीचर फिल्म का निर्माण किया जाए, तो वह अत्यन्त सफल होगी। इस सरस और भावपूर्ण कहानी में लेखिका ने गीत, कविता का सन्निवेश कर एक नया प्रयोग भी किया है, जिससे रसात्मकता कुछ और बढ़ गयी है।

इन कहानियों के माध्यम से हिन्दी-कहानी साहित्य में शिवानी ने अपनी महत्ता स्थापित करते हुए एक विशेष लोकप्रियता प्राप्त की है। नारी उनकी कहानियों का मुख्य केन्द्र है जिसके दोनों रूपों- परम्परागत एवं आधुनिकता को स्थान देते हुए उनकी समस्याओं के समाधान हेतु सजग होकर वे समाज एवं परिवार में उसकी दशा का वास्तविक चित्रण कर पाठकों को नारी-स्थिति में परिष्कार हेतु सोचने को विवश कर देती हैं। उनकी नारियाँ सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति भी हैं और उनमें नारी-सुलभ गुणों का भी समावेश है। जो नारियाँ विपथगामिनी दिखती है, उनकी अपनी विवशता एवं लाचारी है। वे नारी को सती या देवी रूप में चित्रित करके भी उसे मानवी रूप देना चाहती हैं ताकि समाज एवं परिवार में वह पुरुष के समकक्ष खड़ी होकर अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए अपनी सत्ता एवं प्रतिष्ठा स्थापित कर सके। इसलिए उन्होंने परिस्थितियों से संघर्ष करती नारी के विविध रूपों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है। नारी-मनोविज्ञान से भली भाँति परिचित उन्होंने अपनी संवेदना एवं अनुभूति से नारी-जीवन के एक-एक पहलू को संस्पर्श कर इस प्रकार चित्रित किया है कि कोई भी नारी की मनःस्थिति को सहजता से हृदयंगम कर उनके जीवन में परिष्कार हेतु प्रयत्न कर सकता है।

यथार्थ के साथ खड़ी होकर उन्होंने नारी-जीवन से सम्बद्ध विषयों का वर्णन करते हुए परिवेश, प्रकृति एवं घटना की हू-ब-हू प्रस्तुति की है। कुमाऊँ क्षेत्र की होने के कारण उन्होंने अपनी कहानियों में उस क्षेत्र के परिवेश, लोक संस्कृति आदि को अच्छी तरह अनुभूत कराया है। कहीं-कहीं परिवेश एवं प्रकृति-चित्रण में इतनी रम गयी हैं कि कथा का प्रवाह ही अवरुद्ध-सा लगता है, पर वर्णन की कुशलता से पाठक को उदासीन नहीं होने देती, जिससे वह कथा-रस से वंचित भी नहीं होता और स्थान और प्रकृति के आनन्द का भी आस्वाद लेता है। परिवेश एवं प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से कहानियों में अनेक उल्लेख-योग्य स्थल हैं। उन्होंने विप्रलब्धा, तोप, कैंजा नामक तीन कहानियों में कुमाऊँ क्षेत्र के नहान, अल्मोड़ा, लालकुँआ, गर्भ्या, मुनश्यारी की बीहड़ घाटियाँ, मुक्तेश्वर, भुवाली, नैनीताल आदि की चर्चा प्रसंगानुसार करते हुए उनके सम्पूर्ण परिवेश (स्थान, प्रकृति, परम्परा, भाषा, रहन-सहन, प्रवृत्ति आदि) का यथानुरूप वर्णन करने के साथ-साथ 'लाल हवेली' कहानी में कराची पाकिस्तान तथा 'दो सखियाँ' कहानी में सौराष्ट्र में समुद्र स्थित आश्रयादि के परिवेश की भी तदनुरूप अनुभूति कराकर जो स्वानुभूति का परिचय दिया है, वह उनके गहन ज्ञान से यथार्थ का ही दृश्य उपस्थित करता है। विस्तार-भय से यहाँ केवल मुक्तेश्वर का उल्लेख किया जा रहा है—

"मुक्तेश्वर मुझे बेहद पसन्द है। साफ-सुथरे बँगले, पहाड़ के वक्ष को चीरती-फाड़ती, नक्शे में बनी नदियों की क्षीण रेखा-सी पतली मोटर की सड़के, पहाड़ी लोकगीतों की मिठास से मीठी बयार में मधु घोलने वाले, सड़क साफ करते पहाड़ी गैंग कुलियों का कण्ठस्वर, छोटी-छोटी दुकानों में काठ के काले ठेकों में छलकता पीला रायता और पीली में तप्त कांचनवर्णी हल्दी से पीताभ बने जम्बू छौंके आलू।.................. श्रावण का महीना था। लहँगा-

दुपट्टा पहने, थाल-से चन्द्रबिम्ब को नथ से सँवार, सुन्दरी शाहनियों के झुण्ड जल चढ़ाने महादेव की गुफा की ओर जा रहा था। कहीं से पार्थिव पूजन के रुद्रों के श्लोकों की मधुर आवृत्ति का स्वर हवा में तैरता आया, तो मेरे पास ही बैठे एक बुजुर्ग शायद उस नये जोड़े को, जो अपने निर्लज्ज प्रेम-प्रदर्शन से उनकी बूढ़ी मज्जा जलाए जा रहा था, सुना-सुनाकर कहने लगे—"कुछ भी कहो भाई, मर्यादा तो बस अपने कुमायुँ में है; बस और कहीं नहीं"।19 भाषिक संरचना में भी उन्होंने स्थानीय शब्दों का समावेश किया है। यद्यपि उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही है, किन्तु भाषा-मर्मज्ञा उन्होंने अपनी कृतियों में यथास्थान अंग्रेजी, बंगला, गुजराती, उर्दू आदि के शब्दों का समुचित प्रयोग कर भाषा में सहजता एवं सरलता का संचार करते हुए सम्प्रेषणीयता एवं बोधगम्यता ला दी है। कथानुरूप एवं पात्रानुकूल भाषा-प्रयोग में सिद्धहस्त वे 'लाल हवेली' में उर्दू शब्दावली को अपनाती है, तो 'तोप' में अंग्रेजी शब्दावली। वैसे तो सभी कहानियाँ भाषा-विषयक किञ्चित काठिन्य के होते हुए भी मिश्रित भाषा-प्रयोग से सम्प्रेषणीय ही हैं। उनकी भाषा और शैली दोनों अपने ही ढंग की मानी जाती है, साथ ही चरित्र- चित्रण में भी एक अनोखा निरालापन है। "वे चरित्र को शब्दों में कुछ इस तरह पिरोकर पेश करती थीं, जैसे पाठकों के आँखों के सामने राजा रवि वर्मा का कोई खूबसूरत चित्र तैर जाए"।[20] उनकी कहानियों में पात्र हास-परिहास एवं चुटीले व्यंग्य भी करते हैं और उनका चरित्रांकन मनोवैज्ञानिक ढंग से करने में कहानी-लेखिका सक्रिय रही हैं, जिससे अन्य शैलियों के साथ कहानियों में हास्य व्यंग्यपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक शैली का अच्छा सन्निवेश है। पूर्वदीप्ति शैली के आश्रय से भी उन्होंने कथ्य की प्रस्तुति की है।

पात्र स्वयं का व्यक्तित्व भी धारण किये हुए हैं तथा लेखिका द्वारा भी यत्र-तत्र उन्हें व्यक्तित्व प्रदान किया गया है, जिससे उनकी कहानियों में चरित्र-चित्रण की दोनों शैलियाँ- विश्लेषणात्मक एवं नाटकीय-दृष्टिगोचर होती हैं। खास बात यह है कि पात्रों का चरित्रांकन मनोविज्ञान के धरातल पर होने से पाठक उनके स्वभाव एवं गुण-अवगुणों से स्वयं ही अच्छी तरह परिचित हो जाता है। उसके सामने उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही साकार हो उठता है। पात्रों के पारस्परिक व्यवहार एवं वार्त्तालाप उनके चरित्रोद्घाटन में सहायक हैं। घटना-क्रम के विकास एवं पात्रों के चरित्र के स्वरूप को गति देने में सहायक सम्वादों के समुचित प्रयोग एवं उद्देश्य से समन्वित कहानियाँ तात्त्विक दृष्टि से इतनी सफल है कि कहानी-कला का उत्कृष्ट नमूना प्रतीत होती है। कहानी के अन्त में शीर्षक की सार्थकता में पाठकों को परिचित कराने की कला तो मानो शिवानी की अपनी ही है। इसके अतिरिक्त युगीन सन्दर्भों से जुड़ी शिवानी की कहानियों में समसामयिक एवं आगामी समय से भी सम्पृक्त होने का विशेष गुण है और स्वाभाविकता, सादगीपन, सरलता एवं सरसता से अनुप्राणित होने के कारण वे लोकरुचि के सन्निकट होकर पाठकों का कण्ठहार भी बनी रहती है। यह कहना अनुचित नहीं है कि 'कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि निर्मित करने तथा कहानी को केन्द्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। वह कुछ इस तरह लिखती थीं कि लोगों की उसे पढ़ने को लेकर जिज्ञासा पैदा होती थी। उनकी भाषा-शैली कुछ-कुछ महादेवी वर्मा जैसी रही और उनके लेखन में एक लोकप्रिय मसविदा था"।[21] उल्लेखनीय यह है ये कहानियाँ टूटते-बिगड़ते मानवीय सम्बन्धों, संघर्षमयी स्थितियों, फैलते अनाचारों, विघटित जीवन-मूल्यों आदि के वास्तविक चित्रण एवं इनके कारण समाज एवं परिवार के ढाँचे पर पड़ते प्रभाव की यथास्थिति का अंकन कर अपने पाठकों को उससे अवगत कराते हुए उन मानवीय-मूल्यों की स्थापना की प्रेरणा भी देती हैं, जिनसे एक स्वस्थ समाज एवं परिवार की प्रतिष्ठा हो सके। अतः शिवानी की सजग दृष्टि की परिचायिका इन कहानियाँ की उपादेयता तब तक बनी रहेगी, जब तक उक्त स्थिति न आ जाए। नारी-जागरण तो समाज एवं परिवार का ऐसा व्यापक विषय है जिसके लिए उनकी कहानियाँ सदैव ही प्रेरणास्पद रहेंगी।

सन्दर्भ सूची

1. “जिस कथा में किसी क्षेत्र-विशेष के जनजीवन का सम्पूर्ण चित्र हो, वह आंचलिक कहानी है। जिसमें उस क्षेत्र की भाषा, वेशभूषा, धार्मिक मान्यता, समाज-संस्कृति तथा जनजीवन की समस्याओं का विश्लेषण हो, वह आंचलिक कहानी है”।
साभार उद्धृत- कहानी- कुसुम: सम्पादक डॉ. कौशल नन्दन गोस्वामी, कुमार प्रकाशन, बरेली, प्रथम संस्करण- 1994
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. मान सिंह वर्मा, पृष्ठ 419, भारत भारती प्रकाशन एण्ड कं, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ प्रथम संस्करण- 2017 (01.02.2017)
3. विकिपीडिया (साहित्य क्षेत्र में योगदान)
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास: सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 692 नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, संस्करण- 1982
5. नई कहानी की मूल संवेदना: डॉ. सुरेश सिन्हा (भूमिका: डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ; पृष्ठ 14) भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली-6 प्रथम संस्करण- 1968
6. कैंजा- पृष्ठ 103-104 (पाँच बेहतरीन कहानियाँ: शिवानी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण- 2013
7. (क) तोप- पृष्ठ 35 , (ख) तोप- पृष्ठ 36
8. विप्रलब्धा- पृष्ठ 19-20
9. विप्रलब्धा- पृष्ठ 24-25
10. लाल हवेली- पृष्ठ 28-29
11. लाल हवेली- पृष्ठ 32
12. लाल हवेली- पृष्ठ 29, 32, 33
13. दो सखियाँ- पृष्ठ 67
14. दो सखियाँ- पृष्ठ 84
15. कैंजा- पृष्ठ 134
16. कैंजा- पृष्ठ 116
17. कैंजा- पृष्ठ 91
18. कैंजा- पृष्ठ 127
19. तोप- पृष्ठ 37-38
20. विकिपीडिया
21. विकिपीडिया